SKU शोध संचार

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)

Impact Factor SJIF 2025 – 5.306

अंक-3, खण्ड-3, जुलाई - सितम्बर 2025 E-ISSN : 2584-2900

भारतीय ज्ञान परम्परा एवं मानवतावाद

[1]राम प्रसाद रजक

शोधार्थी

[2]दिनेश कुमार मिश्रा

शोध निदेशक

श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

सारांश

आज आवश्यकता है, भारतीय ज्ञान परंपरा एवं मानवतावाद को बढ़ावा देने एवं उसको महत्वपूर्ण लोगों के सामने लाने की। हमारे पूर्वज जिन बड़े-बड़े कार्यो को सिद्ध करके हमारे लिए जो पग-चिन्ह छोड़ गए हैं, उन पर चलने की तथा अपने आप को संयमित, परोपकारी, देशभक्त, कर्मठ, ज्ञानवान, संघर्षशील तथा मानवतावादी बनाने की। जिससे लोग अमानवतावादी, असद मार्ग को छोड़कर सत्य के मार्ग पर चलने लगे। देश और समाज में व्याप्त अराजकता, लूट, बेरोजगारी, दानवता, भ्रष्टाचार, छल कपट शोषण का व्यवहार समाप्त हो जाए तथा पुनः एक श्रेष्ठ गुणों वाले सौम्य समाज एवं राष्ट्र का निर्माण हो जहां समाज का हर व्यक्ति स्वयं को सुरक्षित और प्रसन्न महसूस करें, आदिकाल से ही भारत देश हर क्षेत्र में आगे रहा है। विश्व की समक्ष आए बड़े से बड़े बवालों में भारत ने आगे होकर नेतृत्व कार्य किया है, चाहे वह किसी देश के मध्य युद्ध की बात हो या समझौते की बात हो गुटबाजी की बात हो या मित्रता हो, प्रत्येक समस्या का निदान भारत ने किया है, बड़े से बड़े अनुसंधान किए हैं। तभी यह विश्व गुरु बन सका था। किंतु आज भारत का ज्ञान तिरोहित होता जा रहा है। देश में अराजकता एवं भ्रष्टाचार इस कदर फैल चुका है, कि अब लोगों को सत्य और असत्य एक लगने लगा है, सत्य की खोज करना आज अंधेरे में सुई ढूंढने के बराबर है। ऐसे में यह एक छोटा सा प्रयास मानवतावाद एवं भारतीय ज्ञान परंपरा को प्रकाशित करने का प्रयास है। मानवतावादी विचार वह भावना है जो अति कल्याणकारी है। मानव को उसका अनुकरण देवत्व के पद तक पहुंचा सकता है। आज लोग किसी गरीब असहाय मजबूर की मदद करना बिल्कुल भूल गए हैं, इसे पुर्नजीवित करने की

आवश्यकता है, कि लोग संकट काल में भी धैर्य से काम ले और सकारात्मक विचारों को जीवित रखें, और यह हमेशा याद रखें कि भारतीय संस्कृति महान थी, और महान रहेगी।

बीज शब्द

संस्कृति, परंपरा, मानवता, आस्था, अभिन्न, आयुर्वेद, दृष्टिकोण।

प्रस्तावना

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल्यों में आस्था मानवता में आस्था को पुनर्जीवित करना है। तथा इसके लिए आवश्यक है, कि हम भारतीय संस्कृति की अभिन्न अंग रहे प्राचीन मूल्य जैसे पंच महायज्ञ, 16 संस्कार, तीन रत्न, भारतीय आयुर्वेद पद्धति, सर्वांगीण विकास को प्रोत्साहन देने वाली प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति, वेदों-उपनिषदों पुराणों में निहित व्यावहारिक आध्यात्मिक ज्ञान की अथाह सामग्री, शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य को सम्यक आकार देने वाली अष्टांग योग पद्धति, प्रकृति के प्रति भारतीय ग्रंथों में अदभुत पोषण का दृष्टिकोण आदि के प्रति श्रद्धा व वर्तमान परिस्थितियों के अनुकूल शोध का दृष्टिकोण विकसित करना है। ताकि हमारा विचार शारीरिक मानसिक एवं नैतिक दृष्टिकोण से समुन्नत हो पुनः विश्व गुरु के रूप में स्वयं को प्रतिस्थापित कर सके। तथा लोगों को मानवतावादी विचार दे सकेशोध या अनुसंधान किसी भी राष्ट्र या संस्कृति के विकास में तथा इसकी समृद्धि में नितांत आवश्यक है, शोध का अर्थ केवल रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान आदि के तथ्यों का अन्वेषण व प्रमाणीकरण नहीं है, अपितु वर्तमान में सामाजिक अनुसंधान शोध का बड़ा विस्तृत विज्ञान विषय बन चुका है, क्योंकि सामाजिक क्षेत्र में किया गया शोध व्यक्ति समाज व राष्ट्र के उत्थान में सहायक होता है। भारतीय ज्ञान परंपरा एवं शोध भी शोध के सामाजिक पक्ष से संबंधित है। सामाजिक अनुसंधान का प्रथम क्रमबद्ध एवं विषयात्मक रूप में विवेचित करना इसेवांछित दिशा में मोड़ने के लिए इसे ज्ञान के क्षेत्र में लागू करने योग्य बनाना तथा इस ज्ञान से समाज को लाभान्वित करने हेतु विशिष्ट सामाजिक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए इसमें आवश्यक संशोधन कर कार्य रूप में परिणित करना इन्ही उद्देश्यों द्वारा सामाजिक

अनुसंधान विशुद्ध व्यावहारिक तथा क्रियात्मक अनुसंधान केविभिन्न स्वरूप ग्रहण करता है। इस प्रकार के सामाजिक शोध हमारे जीवन में बहु उपयोगी सिद्ध होते हैं। इस शोध का प्रमुख उद्देश्य भारतीय ज्ञान परंपरा में मानवतावादी भावनाएं खोजना तथा उन्हें उजागर करना है। ताकि लोग भारतीय ज्ञान परंपरा को पुनः अपना सकें जिससे हम पुनः अपनी प्राचीन प्रभावशाली शिक्षा पद्धति को प्राप्त कर सकें।

शोधविधि

शोध विधि वह तरीका होता है, जिसका प्रयोग करके शोधकर्ता अपने अनुसंधान को पूर्ण करता है, तथा ज्ञान को खोजने व सत्य को उजागर करने का प्रयास करता है। जिससे लोगों को सच्चाई का कल्याणकारी मार्ग मिल सके तथा ज्ञान का उपयोग कर वह अध्ययनशील व्यक्ति अपने जीवन की समस्याओं का हाल प्राप्त कर सके, इस शोध पत्र में विश्लेषणात्मक, वर्णनात्मक तथा अवलोकन विधियों का प्रयोग किया गया है। तथा भारतीय ज्ञान परंपरा में मानवतावादी वृत्तियों को खोजने का प्रयास किया गया है। जिससे लोग विदेशी कारण से बच सके तथा स्वदेशी अपनाकरश्रेष्ठता के मार्ग पर आगे बढ़ सके शोध से संबंधित आवश्यक जानकारी का संकलन पुस्तकालय में उपलब्ध पुस्तकों से द्वितीयक सामग्री के रूप में किया गया है। एवं कुछ हद तक अपने ज्ञान एवं स्वाविवेक का प्रयोग किया गया है, आरंभ में यह मानकर चले थे, कि मानवतावाद का पूर्ण पतन हो गया है, किंतु अपने अनुसंधान शोध पत्र द्वारा यह सिद्ध करने का प्रयास किया है, कि भारतीय ज्ञान परंपरा में मानवतावादी सहयोगात्मक वृत्ति कूटकूट कर भरी है-, बस आवश्यकता है, उसको उजागर करने एवं प्रयोग करने की, तथा उसका सम्मान करने व बनाए रखने की। आवश्कता पड़ने पर लोगों को यथोचित सलाह देने की, एवं भारतीयता को अपनाने एवं उसका मनन चिंतन करने की आवश्यकता है।

शोध विस्तार

भारत देश की ज्ञान परंपरा एक महानतम संस्कृति है। इसकी जितनी प्रशंसा की जाए कम है एवं उसमे मौजूद 'वसुधैव कुटुंबकम' व मानवतावादी विचार भी उतने ही महान कल्याणप्रद एवं

अकाटय हैं, जितने की दुनिया की वास्तविकता या प्रकृति की महानता अकाट्य है। मानवतावादी शिक्षा वह शिक्षा है, जिसमें बालक को केंद्र में रखकर उनकी रुचि और एवं आवश्यकता के अनुसार शिक्षा दी जाती है। प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा में गुरुकुल होते हैं जिनमें शिष्यों की राशियों का ध्यान रखा जाता था। जिन्हें नैतिकमूल्य, ईमानदारी, सत्यवादिता, परोपकार, सदाचार, प्राणी मात्र के प्रति दया, सहिष्णुता, अहिंसा, कर्मठता आदि गुण सिखाए जाते थे। जिससे भी मानव के महत्व को समझा जाताथा, और सच्चे मानवतावादी बनाकर भारत ही नहीं विश्व का कल्याण करते थे। ''भारत'' शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है, भारत, भा का शाब्दिक अर्थ प्रकाश तथा रत का अर्थ संलग्न है ।अतः जो सदैव ज्ञान के प्रकाश से आलोकित या ज्ञान की रोशनी से चमत्कृत है, वहीं भारत है। हमारे प्राचीन संस्कार हमें धरती को माता मानकर उसका शोषण नहीं अपितु पोषण करने की प्रेरणा प्रदान करते हैं। "माता भूमि:पुत्रों अहम प्रथिव्य:" आज जब संपूर्ण विश्व कोरोना जैसी अनसुलझी विकराल त्रासदी से त्रस्त रहा तब भारत सहित संपूर्ण विश्व में भारतीय संस्कृति की उपादेयता को समझ गया कि किस प्रकार हमारा प्राचीन ज्ञान तथा संस्कारों का ढांचा ही सब कुछ इस तरह का है कि इस प्रकार की समस्याएं उत्पन्न ही ना हों। भारतीय संस्कृति प्रारंभ से ही हाथ मिलाने की जगह हाथ जोड़कर अभिवादन करती रही है। अब अधिकांश लोग भारतीय संस्कृति को अपना रहे हैं, यानी हाथ जोड़कर नमस्ते करते हुए दिखाई देते हैं। अर्थात भारतीय मानवतावाद का अनुकरण कर रहे हैं। भारतीय आयुर्वेद में चरक द्वारा लिखित चरक संहिता संस्कृत की संहिता तथा बागभट्ट द्वारा लिखित अष्टांग हृदय को आयुर्वेद त्रयी ग्रंथ कहा जाता है।

अज्ञानता का नाश मानवतावाद -समाज कल्याण में सहायक है। यह सामाजिक प्रगति में सहायक है, सामाजिक नियंत्रण में सहायक है। यह सामाजिक विज्ञान की उन्नति में सहायक है। सैद्धांतिक उपयोगिता व हमारी प्राचीन अथाह ज्ञान सागर की उपेक्षा देखकर तथा पश्चिम का अंधानुकरण को देखने के बाद एक ही कहावतप्रासंगिक प्रतीत होती है,'पर का जोगी जोगना आनगांव का सिद्ध'।

भारत को सदैव विश्व गुरु का दर्जा दिया गया है। हमें यदि यह अप्रतिम अलंकरण प्राप्त है तो हमारी आधुनिक उपलब्धियों के कारण नहीं अपितु हमारी प्राचीन उन्नत गौरवशाली संस्कृति तथा विज्ञान के कारण है, किसी भी श्रेष्ठ प्राचीन संस्कृति क़ो अप्रासांगिक कहकर उनका उपहास करना नहीं चाहिए। अपितुनूतन समय में विस्तार के अनुपम तथ्य हमारे लिए किस प्रकार प्रासंगिक व कल्याणकारी हो सकते हैं यह शोध का एक अति उत्तम विषय है। जिस प्रकार शोध का एक अर्थ रिसर्च अर्थात पुनः खोज है। उसी प्रकार हमें भी हमारे प्राचीन संस्कारों व संस्कृति को पुर्नजीवित करके यथार्थ जीवन में समाविष्ट करना होगा।

वास्तविक अर्थों का ज्ञान

हमारी प्राचीन परंपरा में इस विषय के शोध की विशेष आवश्यकता है, कि वेदों, पुराणों, उपनिषदों, महाकाव्यो आदि में कई तथ्यों को रुचिकर बनाने व समझने के दृष्टिकोण से सांकेतिक रूप में कहा गया है, किंतु हम उसका सीधा अभीजनित अर्थ ग्रहण करके अर्थ का अनर्थ कर देते हैं, तथा रावण के लिए दशानन देवताओं आदि के लिए सहस्रक्ष आदि का विशिष्ट अभिप्राय है, संभव है कि चार वेद व6 वेदंतों का ज्ञाता होने से रावण को दशानन कहा गया हो, राजा गुप्तचर रूपी अक्षो से चारों ओर की दृष्टि रखता है, अतः उसे सहस्रताक्ष कहा गया हो इस प्रकार यज्ञ में पशु बलि का निषेध है। यह बात मोटी बुद्धि से भी समझी जा सकती है, कि जब यज्ञ का उद्देश्य वातावरण को शुद्ध करना तथा जन कल्याण है, तो उसमें पशु मांस की दुर्गंध युक्त आहूति कैसे दी जा सकती है। मीमांसा दर्शन में स्पष्ट रूप से यज्ञ में मांस का निषेध किया गया है। पिछली कुछ समय से लोगों ने आयुर्वेद का महत्व पुनः स्वीकार किया है तथा आश्चर्यजनक रूप से आयुर्वेद द्वारा उन रोगों की सफलतापूर्वक चिकित्सा की गई है, जिसे आधुनिक एलोपैथिक चिकित्सा भी ठीक नहीं कर सकी।

शिक्षा पद्धति- हमें पुनः भारत की प्राचीन शिक्षा पद्धति को जागृत करने की आवश्यकता है, जो ''सा विद्या या विमुक्तये'' सिद्धांत पर आधारित थी, जबकि वर्तमान शिक्षा पद्धति ''सा विद्या या नियुक्तये'' सिद्धांत पर आधारित हो चली है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था पूर्णता

व्यावसायिक सिद्धांतों पर आधारित है। इसमें चारों ओर बनावटीपन दिखाई देता है, वैदिक शिक्षा प्रणाली नालंदा, तक्षशिला, विक्रमशिला, जैसे विश्वविद्यालयों में प्रचलित शिक्षा प्रणालियों का शोध करना होगा। एक बात स्पष्ट है, कि प्राचीन शिक्षा प्रणाली को वर्तमान समय में यथावत लागू नहीं किया जा सकता है। किंतु यह शोध का अत्यंत उपयोगी विषय हो सकता है। कि प्राचीन सिद्धांतों को अपना कर किस प्रकार शिक्षा को ज्ञानमुखी व रोजगारमुखी बनाया जा सकता है, शिक्षा व्यक्ति को ब्रह्मांड से, आत्मा को परमात्मा से, और साधक को साध्य से, जोड़ने का साधन है। इसके अतिरिक्त मंत्रयोग, लययोग, हठयोग,अति महत्वपूर्ण साधन है। यज्ञ हिंसा रहित कर्म है। इसमें हिंसा नहीं हो सकती इस प्रकार बलि जिसका अर्थ दान उपहार भेंट आदि थे, मांसभक्षियों ने स्वार्थ के लिए इसका अर्थ पशुबलि कर दिया।

भारतीय ज्ञान का वैज्ञानिकमहत्व

आज यह महत्वपूर्ण है, कि हमारी समस्त प्राचीन परंपराएं जैसे तिलक लगाना, कर्णवेध, मुंडन, समस्त संस्कार, गंगा में आरती, विसर्जन की पश्चात स्नान, आरती करना, घंटी बजना, यज्ञ के लिए अग्नि जलना, शिखा रखना, चरण स्पर्श करना, आदि के पीछे बड़ी-बड़ी वैज्ञानिक मान्यताएं हैं। जिनका शोध तथा युवा पीढ़ी के सामने ले जाने की आवश्यकता है। इसी प्रकार योग का आज संकुचित अर्थ लगा दिया गया है, योग को केवल आज दिखावटी व्यायाम माना जाता है, जिसे केवल योग दिवस में करके छोड़ दिया जाता है, जबकि योग का अर्थ है जोड़ना। इसलिए योग से हमेशा जुड़े रहना चाहिए। महर्षि पतंजलि ने कहा है "योग:चित्तो वृत्ति निरोध:" योग मन की गलत वृत्तियों को नियंत्रित करने का महत्वपूर्ण उपाय है। ज्यामिति के कई महत्वपूर्ण नियमों की खोज बोधायन द्वारा करना, शून्य तथा दशमलव प्रणाली का जनक भारत का होना, पिंगलाचार्य के नियमों का एक तरह से दो अंकीय बाइनरी गणित का कार्य करना आदि असाधारण है। महर्षि भारद्वाज का विमानशास्त्र वेदांग ज्योतिष में सूर्य, चंद्रमा, नक्षत्र और सौरमंडल के ग्रह और ग्रहण के विषय में जानकारी भास्कराचार्य द्वारा सिद्धांत शिरोमणि ग्रंथ में गुरुत्वाकर्षण का उल्लेख करना, शताब्दियों पूर्व नोवाहनं की कला का जन्म होना, भगवान राम द्वारा यमुना पार करने के लिए नौका का प्रयोग करना, महर्षि कणाद द्वारा डाल्टन से पूर्व

परमाणुवाद के सिद्धांत का प्रतिपादन, वेदांत दर्शन में पंचीकरण की प्रक्रिया द्वारा सृष्टि पांडुलिपियां आज शोध का इंतजार कर रही हैं, ताकि भारतीय ज्ञान विज्ञान को यथोचित स्थान मिल सके, पांडुलिपियों सहित प्राचीन ज्ञान को समुचित डिजिटलाइजेशन की आवश्यकता है, ताकि हमारे ज्ञान का संरक्षण तथा प्रचार समुचित रूप से हो सके, इसके अतिरिक्त प्राचीन वास्तु शास्त्र, प्राचीन कृषि विषयक ग्रंथ जैसे कृषि पाराशर, वृक्षार्युवेद का भी वर्तमान आवश्यकताओं के अनुकूल शोध कार्य किया जाना चाहिए।

उपनिषद एवं पुराण

उपनिषद एवं पुराण ज्ञान की अमूल्य निधि हैं, उपनिषदों में प्रतिपादित सृष्टि सिद्धांत, तैतंरेई उपनिषद का पंचकोश सिद्धांत, विभिन्न संवाद, आत्मा की जाग्रत संतुष्टि, सपना व तुरीय अवस्थाएं आदि अद्भुत है। इनमें जितना शोध किया जाए उतना ही कम है, श्रीमद् भागवत पुराण के अनुसार जब संसार अंधकार से उबरा तो जल में प्रारंभिक मूल प्रकृति से वनस्पति बीज उत्पन्न हुआ जिससे पौधों को जीवन मिला पौधों से कीटाणु उत्पन्न हुए जो जीव अनुक्रम में सांप, कछुआ, पक्षी, पशु आदि अवस्थाओं में दुममानव के रूप में प्राप्त किया पौधों व जीब की अनुक्रम उत्पत्ति का यह विशुद्ध वैज्ञानिक ज्ञान है। लोगों ने भारतीय संस्कृति का अध्ययन किया, और नासा जैसे संस्थान हमारे ग्रथों व परंपराओं का अध्ययन कर समृद्ध हो रहे हैं। किंतु हमारी स्थिति उस कस्तूरी मृग के समान हो चली है, जिसे स्वयं की सुगंध का ज्ञान नहीं है, अतः हमें फिर जाग कर पुनः विश्वगुरु पदवी प्राप्त करनी है, तो भारतीय ज्ञान परंपरा को पुनर्जीवित करना होगा।

तकनीक तथा अर्थव्यवस्था

आधुनिक काल में तकनीक तथा आर्थिक परिवर्तनों के सहयोग से समाज में तीव्र परिवर्तन आया है। तकनीक समाज को कई प्रकार से प्रभावित करती है, यह हमारी मदद प्रकृति क़ो विभिन्न तरीकों से नियंत्रित करने तथा अपने अनुरूप ढालने अथवा उसका विदोहन करने में करती है

बाजार जैसी शक्तिशाली संस्था से जुड़कर तकनीकी परिवर्तन अपने सामाजिक प्रभाव की तरह ही प्राकृतिक कारकों जैसी सुनामी अथवा तेल की खोज की तरह प्रभावी हो सकते हैं।

राजनीति तथा संस्कृति

इतिहास के लेखन तथा संस्मरण की पुरानी विधियों में राजाओं तथा रानियों की क्रियाएं, सामाजिक परिवर्तन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती थी। परंतु उस समय राजा तथा रानियां विस्तृत राजनीतिक सामाजिक तथा आर्थिक परिवर्तनों का प्रतिनिधित्व करते थे, किंतु आज लोकतंत्र ने मानवतावाद को निकट ला दिया है। संस्कृति को यहां विचारों मूल्य और मान्यताओं जो मनुष्य के लिए आवश्यक होते हैं, तथा उनके जीवन को आकार देने में मदद करती हैं, क़े छोटे से लेवल के रूप में प्रयुक्त किया गया है। इन विचारों तथा मान्यताओं में परिवर्तन प्रकृतियों से सामाजिक जीवन में परिवर्तन को दिखाते हैं। सामाजिक सांस्कृतिक संस्था का सबसे सामान्य उदाहरण धर्म है, जिसका हम पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा। धार्मिक मान्यताओं तथा साधनों ने समाज को व्यवस्थित करने में मदद की, धर्म इतना महत्वपूर्ण है कि कुछ विचारको ने सभ्यता को धार्मिक परिपेक्ष में परिभाषित किया है। और कहा है कि भारतीय संस्कृति प्राचीन किंतु मानवतावादी है।

निष्कर्ष

भारतीय ज्ञान परंपरा हजारों वर्ष पुरानी है, इस ज्ञान परंपरा में आधुनिक विज्ञान प्रबंधन सहित सभी क्षेत्र के लिए अद्भुत खजाना है। भारतीय दृष्टिकोण से ही परंपरा का अध्ययन कर हम एक बार फिर विश्व गुरु बन सकते हैं। हमें अपनी मानसिकता बदलकर अपने जीवन में भारतीयता को अपनाने की जरूरत है, पश्चिम के विकासवादी मॉडल को छोड़कर हम दुनिया में खुशहाली ला सकते हैं। हमने अब तक जो कुछ पढ़ा है या पढ़ाया है उससे यह लगता है, कि हमें अभी और भारतीय ज्ञान परंपरा का अध्ययन करने की जरूरत है। हम एक बार फिर विश्व गुरु बन सकते हैं। हमें अपनी मानसिकता को बदलकर अपने जीवन में भारत के प्राचीन महान सिद्धांतों नियमों को सम्मिलित करने की आवश्यकता है।

हर विषय को अपने नजरिए से प्रस्तुत कर हमने भारतीय ज्ञान परंपरा का अपमान किया है। हम भारतीय अपनी परंपरा, संस्कृति, ज्ञान, महान विभूतियों को तब तक खास तबज्जो नहीं देते जब तक वह विदेशी होकर हमारे पास वापस नहीं लौटते, तभी हम उनको स्वीकार करते हैं। यह हमारी बड़ी विडंबना है, यही कारण है कि आज यूरोपीय राष्ट्रों और अमेरिका ने योग, आयुर्वेद, शाकाहार, प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, होम्योपैथी जैसे उपचार को लोकप्रियता प्रदान की है। जबकि हम उन्हें भूल चुके हैं। हमें अपनी जड़ी-बूटियां, नीम-हल्दी, और गोमूत्र का ख्याल तब आता है, जब अमेरिका उन्हें पेटेंट करवा लेते हैं। इसी प्रकार योग जब योगा बन जाता है तब हम उसे अपना लेते है। पाश्चात्य संस्कृति में पले-बढे लोग भारतीय विवाह पद्धति को अपनाते हैं, जबकि भारतीय लोग विदेशी पद्धति से विवाह करते हैं। इसी प्रकार हम भारतीय हिंदी भाषा को छोड़कर विदेशी अंग्रेजी भाषा के पीछे भागते हैं, आज हम अपने आचरणों से गांधी जी के आदर्शों को तिलांजलि दे रहे हैं। अमेरिका में पहले कुछ वर्षों में करीब 50 विश्वविद्यालय और कॉलेजों ने गांधीवाद पर एक कोर्स आरंभ किया है। हम आत्म गौरव और राष्ट्रीय स्वाभिमान की अनदेखी करते हुए अपनी संस्कृति और उसकी विशुद्ध विरासत को भूलते जा रहे हैं। अभी कुछ वर्षों पूर्व भी भारत के युवा भारतीय आदर्श सिद्धांतों विचारों और चिंतन को अपनाते थे, तथा अपने जीवन में उतारते थे, जिससे उनकी आयु लंबी हुआ करती थी किंतु आज पाश्चा त्य संस्कृति और चकाचौंध ने युवाओं को भ्रमित कर दिया है ।भारतीय संस्कृति के अनुगमन में पिछड़ेपन का एहसास होने लगा है, युवा पीढ़ी के ऊपर देश के भविष्य की जिम्मेदारी है। जिसकी ऊर्जा से रचनात्मक कार्य सृजन होना चाहिए। किन्तु वे भ्रमित दिखाई पड़ते हैं। भारत अपने भाव राग और ताल से स्पंदन उत्पन्न कर संपूर्ण विश्व को मानवता भाईचारा और जीवंत अमूर्त विरासत जो उसकी वैश्विक सभ्यता की विरासत है ।इस विरासत से भिन्न विभिन्न राष्ट्रों के बीच तथा संस्कृतियों के बीच संवाद बनाने की प्रक्रिया आरंभ करता है। भारतीय ज्ञान परंपरा को स्थापित करने के प्रयास स्वाधीनता मिलने के साथ-साथ ही किए जाने चाहिए थे, किंतु अभी भी देर नहीं हुई है। भारतीय संस्कृति को बचाना और उसको पर्याप्त महत्व दिए जाना बहुत आवश्यक है, उसको अपनाना बहुत आवश्यक है।

संदर्भ ग्रंथ

1. पाठक पी. डी. एवं त्यागी जी. एस. डी. सन 2008-09 "शिक्षा की सामान्य सिद्धांत" अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा उत्तर प्रदेश।
2. नंदन कुमार जे 2019-20 "बदलती दौर में हिंदुत्व भाषा बील्सइंडस स्कॉ "98 प्रथम तल मोहन नगर गाजियाबाद उत्तर प्रदेश।
3. लाल रमन बिहारी और पालोद सुनीता 2013-14 शैक्षिक चिंतन एवं प्रयोग विनय राखीजा प्रकाशन आर लाल बुक डिपो मेरठ उत्तर प्रदेश।
4. त्यागी गुरशरण दास 2016-17 शिक्षा की दार्शनिक परिपेक्ष श्री विनोद पुस्तक सदन आगरा उत्तर प्रदेश।

SKU SHODH SANCHAR शोध संचार